1.3
खड़ीबोली का महत्व

प्रस्तुतकर्ता : डॉ. विनोद श्रीराम जाधव
निर्माता : हिंदी विभाग

मानक हिंदी के रूप में खड़ीबोली का महत्व

- *सामाजिक संप्रेषण के अपने प्रतिमान हैं।*
- *व्यक्ति प्रायः वाग्व्यवहारों के अवसरानुकूल प्रतिमानों को ध्यान में रखकर बातचीत करता है।*
- *किसी भाषा क्षेत्र की मानक भाषा का आधार कोई बोली अथवा उपभाषा ही होती है किन्तु कालान्तर में उक्त बोली एवं मानक भाषा के स्वरूप में पर्याप्त अन्तर आ जाता है।*

मानक हिंदी के रूप में खड़ीबोली का महत्व

- *संपूर्ण भाषा क्षेत्र के शिष्ट एवं शिक्षित व्यक्तियों द्वारा औपचारिक अवसरों पर मानक भाषा का प्रयोग*
- *साहित्य का माध्यम बन जाने के कारण स्वरूपगत परिवर्तन*

मानक हिंदी के रूप में खड़ीबोली का महत्व

- *प्रत्येक भाषा क्षेत्र में किसी क्षेत्र विशेष के भाषिक रूप के आधार पर उस भाषा का मानक रूप विकसित होता है*
- *इसका उस भाषा-क्षेत्र के सभी क्षेत्रों के पढ़े-लिखे व्यक्ति औपचारिक अवसरों पर प्रयोग करते हैं*

मानक हिंदी के रूप में खड़ीबोली का महत्व

- *मानक हिंदी अथवा व्यावहारिक हिंदी का प्रयोग सम्पूर्ण हिंदी भाषा क्षेत्र में बढ़ रहा है*
- *प्रत्येक हिंदी भाषी व्यक्ति शिक्षित, सामाजिक दृष्टि से प्रतिष्ठित तथा स्थानीय क्षेत्र से इतर अन्य क्षेत्रों के व्यक्तियों से वार्तालाप करने के लिए इसी को आदर्श, श्रेष्ठ एवं मानक मानता है।*

मानक हिंदी के रूप में खड़ीबोली का महत्व

- *गाँव में रहने वाला एक सामान्य एवं बिना पढ़ा लिखा व्यक्ति भले ही इसका प्रयोग करने में समर्थ तथा सक्षम न हो फिर भी वह इसके प्रकार्यात्मक मूल्य को पहचानता है तथा वह भी अपने भाषिक रूप को इसके अनुरूप ढालने की जुगाड़ करता रहता है।*

मानक हिंदी के रूप में खड़ीबोली का महत्व

- *जो मजदूर शहर में काम करने आते हैं वे किस प्रकार अपने भाषा रूप को बदलने का प्रयास करते हैं- इसको देखा परखा जा सकता है।*
- *पूरे भाषा क्षेत्र में इसका व्यवहार होने तथा इसके प्रकार्यात्मक प्रचार-प्रसार के कारण विकसित भाषा का मानक रूप भाषा क्षेत्र के समस्त भाषिक रूपों के बीच संपर्क सेतु का काम करता है तथा कभी-कभी इसी मानक भाषा रूप के आधार पर उस भाषा की पहचान की जाती है।*

मानक हिंदी के रूप में खड़ीबोली का महत्व

- हिंदी भाषा का क्षेत्र बहुत विस्तृत है।
- इस कारण इसकी क्षेत्रगत भिन्नताएं भी बहुत अधिक हैं।
- 'खड़ी बोली' हिंदी भाषा का उसी प्रकार एक क्षेत्रीय भेद है, जिस प्रकार हिंदी भाषा के अन्य बहुत से क्षेत्रगत भेद हैं।
- परिनिष्ठित खड़ीबोली का पूरे देश में प्रसार होने के कारण इसका स्वरूप अक्षेत्रीय हो गया है।

मानक हिंदी के रूप में खड़ीबोली का महत्व

- हिंदी भाषा क्षेत्र में बहुत सी उपभाषाएँ हैं जिनमें पारस्परिक बोधगम्यता का प्रतिशत बहुत कम है
- किंतु ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से सम्पूर्ण भाषा क्षेत्र एक भाषिक इकाई है तथा
- इस भाषा-भाषी क्षेत्र के बहुसंख्य भाषा-भाषी अपने-अपने क्षेत्रगत भेदों को हिंदी भाषा के रूप में मानते एवं स्वीकारते आए हैं।

मानक हिंदी के रूप में खड़ीबोली का महत्व

- कुछ विद्वानों ने इस भाषा क्षेत्र को हिंदी पट्टी के नाम से पुकारा है ।
- डॉ.रामविलास शर्मा ने इस हिन्दी भाषी क्षेत्र के निवासियों के लिए 'हिन्दी जाति' का अभिधान दिया है।

मानक हिंदी के रूप में खड़ीबोली का महत्व

- *हिन्दी, चीनी एवं रूसी जैसी भाषाओं के क्षेत्रगत प्रभेदों की विवेचना यूरोप की भाषाओं के आधार पर विकसित पाश्चात्य भाषाविज्ञान के प्रतिमानों के आधार पर नहीं की जा सकती।*

मानक हिंदी के रूप में खड़ीबोली का महत्व

- *अपने 28 राज्यों एवं 07 केन्द्र शासित प्रदेशों को मिलाकर भारत देश है, उसी प्रकार भारत के जिन राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों को मिलाकर हिन्दी भाषा क्षेत्र बनता है, उस हिन्दी भाषा-क्षेत्र के अन्तर्गत जितने भाषिक रूप बोले जाते हैं उनकी समष्टि का नाम हिन्दी भाषा है।*

मानक हिंदी के रूप में खड़ीबोली का महत्व

- *हिन्दी भाषा क्षेत्र के प्रत्येक भाग में व्यक्ति स्थानीय स्तर पर क्षेत्रीय भाषा रूप में बात करता है।*
- *औपचारिक अवसरों पर तथा अन्तर-क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं सार्वदेशिक स्तरों पर भाषा के मानक रूप अथवा व्यावहारिक हिन्दी का प्रयोग करता है।*

मानक हिंदी के रूप में खड़ीबोली का महत्व

- *उत्तर प्रदेश हिन्दी भाषी राज्य है जिसमें खड़ी बोली, ब्रजभाषा, कन्नौजी, अवधी, बुन्देली आदि बोलियाँ सम्मिलित हैं ।*

- *मध्य प्रदेश भी हिन्दी भाषी राज्य है अथवा बुन्देली, बघेली, मालवी, निमाड़ी आदि बोलियों का व्यवहार होता है।*

मानक हिंदी के रूप में खड़ीबोली का महत्व

- *विदेश सेवा में कार्यरत अधिकारी जानते हैं कि कभी देश के नाम से तथा कभी उस देश की राजधानी के नाम से देश की चर्चा होती है।*
- *वे यह भी जानते हैं कि देश की राजधानी के नाम से देश की चर्चा भले ही होती है, मगर राजधानी ही देश नहीं होता।*
- *इसी प्रकार किसी भाषा के मानक रूप के आधार पर उस भाषा की पहचान की जाती है मगर मानक भाषा, भाषा का एक रूप होता है: मानक भाषा ही भाषा नहीं होती।*

मानक हिंदी के रूप में खड़ीबोली का महत्व

- *इसी प्रकार खड़ी बोली के आधार पर मानक हिंदी का विकास अवश्य हुआ है किंतु खड़ी बोली ही हिंदी नहीं है।*
- *तत्वतः हिंदी भाषा क्षेत्र के अन्तर्गत जितने भाषिक रूप बोले जाते हैं उन सबकी समष्टि का नाम हिंदी है।*

मानक हिंदी के रूप में खड़ीबोली का महत्व

- *हिंदी को उसके अपने ही घर में तोड़ने के षड्यंत्र को विफल करने की आवश्यकता है तथा इस तथ्य को बलपूर्वक रेखांकित, प्रचारित एवं प्रसारित करने की आवश्यकता है कि -*

मानक हिंदी के रूप में खड़ीबोली का महत्व

- 1991 की भारतीय जनगणना के अंतर्गत भारतीय भाषाओं का विश्लेषण –
- मातृभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार करने वालों की संख्या
  - उत्तर प्रदेश (उत्तराखंड राज्य सहित) में 90.11, बिहार (झारखण्ड राज्य सहित) में 80.86, मध्य प्रदेश (छत्तीसगढ़ राज्य सहित) में 85.55, राजस्थान में 89.56, हिमाचल प्रदेश में 88.88, हरियाणा में 91.00, दिल्ली में 81.64 तथा चण्डीगढ़ में 61.06 है।

समाहार

- हिन्दी एक विशाल भाषा है।
- विशाल क्षेत्र की भाषा है।
- हिंदी का अत्यंत विशाल अक्षेत्रीय संदर्भ भी है – भारत की राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा के रूप में; भारतीय उपमहाद्वीप/ दक्षेस की संपर्क भाषा के रूप में; पहली पीढ़ी के प्रवासी भारतीयों की सासंकृतिक भाषा के रूप में; दूसरी पीढ़ी के प्रवासी भारतीयों की असमता की भाषा के रूप में, विश्व भाषा के रूप में
- चीनी भाषा के बाद हिंदी संसार में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है।


धन्यवाद